परव्योम के परमलोक—अपने निजधाम (गोलोक-वृन्दावन) का दिग्दर्शन मात्र कराया है। परन्तु 'ब्रह्मसंहिता' में उसका विशद वर्णन है। वैदिक वाङ्मय के अनुसार भगवद्धाम से उत्तम अन्य कुछ भी नहीं है, इसलिए वही परमगति है। उसमें प्रविष्ट प्राणी प्राकृत-जगत् में फिर कभी नहीं आता। श्रीकृष्ण और श्रीकृष्ण के परमधाम में भेद नहीं है, दोनों समान दिव्यगुणों से युक्त हैं। इस पृथ्वी पर, दिल्ली से नब्बे मील दक्षिण-पूर्व में स्थित वृन्दावन परव्योम के उसी गोलोक-वृन्दावन का प्रतिरूप है। श्रीकृष्ण ने धराधाम पर अवतरित होकर इस वृन्दावन धाम में दिव्य लीलारस का परिवेषण किया था।

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्।।२२।।

पुरुषः=पुरुष; **सः**=वह; **परः**=परम; **पार्थ**=हे पृथापुत्र; **भक्त्या**=भक्तियोग द्वारा; **लभ्यः**=प्राप्त होने योग्य है; **तु**=परन्तु; **अनन्यया**=शुद्ध तथा अविचल (अनन्य); **यस्य**=जिसके; **अन्तःस्थानि**=भीतर; **भूतानि**=सम्पूर्ण जीव हैं; **येन**=जिसके द्वारा; **सर्वम्**=सब कुछ; **इदम्**=यह; **ततम्**=व्याप्त है।

अनुवाद

वे परम पुरुष भगवान् अनन्य भक्ति से ही प्राप्त हो सकते हैं। अपने परमधाम में विराजमान होते हुए भी वे सर्वत्र व्याप्त हैं और सभी कुछ उन में स्थित है।।२२।।

तात्पर्य

स्पष्ट कथन है कि वह परम-लक्ष्य, जहाँ से पुनरागमन नहीं होता, परमपुरुष श्रीकृष्ण का धाम ही है। 'ब्रह्मसंहिता' में इस परमधाम को **आनन्दचिन्मयरस** कहा गया है, अर्थात् वह स्थान जहाँ सभी कुछ दिव्य रस से पूर्ण है। वहाँ अभिव्यक्त सम्पूर्ण वैचित्री भौतिक जड़ता से रहित दिव्य रसमयी है। यह सारी वैचित्री श्रीभगवान् का दिव्य आत्म-विस्तार है, क्योंकि वह धाम पूर्णरूप से अन्तरंगा शक्ति का कार्य है, जैसा सातवें अध्याय में वर्णन है। जहाँ तक इस प्राकृत-जगत् का सम्बन्ध है, अपने परमधान में नित्य विराजमान रहने के साथ ही श्रीभगवान् अपनी अपरा शक्ति के रूप में सर्वव्यापक हैं। इस प्रकार अपनी परा-अपरा शक्तियों के माध्यम से वे प्राकृत-अप्राकृत ब्रह्माण्डों में सर्वत्र हैं। **यस्यान्तःस्थानि,** अर्थात् सभी कुछ उन्होंने धारण कर रखा है, चाहे वह पराशक्ति हो अथवा अपरा शक्ति।

यहाँ निश्चित उल्लेख है कि एकमात्र भक्ति के द्वारा वैकुण्ठ लोकों में प्रवेश हो सकता है। सम्पूर्ण वैकुण्ठ धामों में एक भगवान् श्रीकृष्ण ही असंख्य अंश-रूपों में हैं। ये सब चतुर्भुजधारी अंश असंख्य वैकुण्ठ लोकों के अधिपति हैं। उनके अलग-अलग नाम हैं, जैसे—पुरुषोत्तम, त्रिविक्रम, केशव, माधव, अनिरुद्ध, हृषीकेश, संकर्षण, प्रद्युम्न, श्रीधर, वासुदेव, दामोदर, जनार्दन, नारायण, वामन, पद्मनाभ आदि। ये स्वांशरूप उस वृक्ष के पत्तों के समान हैं, जिसके मूल श्रीकृष्ण हैं। अपने परमधाम